सविता सिंह

आनेवाले दिनों में

आनेवाले दिनों में
नींद नहीं होगी
धूप के धब्बे होंगे उनमें
कहीं होगी कोई चिड़िया
चुपचाप बैठी
गुमसुम किसी पेड़ की प्रतीक्षा में

आनेवाले दिनों में
हम न होंगे अपने जैसे
न होगा जीवन अपने जैसा
उसकी हल्की छायाएँ होंगी
कमज़ोर धीमी पग भरती

कहीं किसी पवित्र भावना के बीच होगी
जीवन में आस्था भी सिर झुकाये

अपने जैसा जीवन
Delhi, Radhakrishnan, 2001: 47